एक ऋषि ने दिया एक ऋषि को भक्तिरस का ज्ञान

श्रीभागवत पुराण से एक कहानी

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा पुनःकथित

महर्षि वेदव्यास भारतीय इतिहास के अत्यन्त विख्यात विद्वानों और आध्यात्मिक गुरुओं में से एक माने जाते हैं। भारतीय शास्त्रीय परम्परा में उनका योगदान अतुलनीय है। उनके नाम, 'वेदव्यास' का अर्थ है, "वेदों के संकलनकर्ता।" साथ ही साथ, उन्होंने महाभारत लिखा और छत्तीस पुराणों का अभिलेखन किया। ये मूलभूत ग्रन्थ पहले केवल मौखिक परम्परा में ही विद्यमान थे। वेदव्यास एक सद्गुरु थे और उनके शिष्यों ने उनका सम्मान करने हेतु गुरुपूर्णिमा महोत्सव का शुभारम्भ किया।

एक दिन, देवर्षि व संगीतज्ञ नारद मुनि ने महर्षि वेदव्यास जी से जाकर मिलने का निश्चय किया। अपनी वीणा बजाते हुए और आनन्द व उल्लास से भगवन्नाम, "नारायण, नारायण" गाते हुए, वे प्राचीन व पवित्र नदी, सरस्वती के तट पर स्थित वन से होकर जा रहे थे। वन हरे-भरे पेड़-पौधों, मीठे और रसीले फलों व घने छायादार वृक्ष-कुंजों से भरा हुआ था। झाड़ियाँ रंग-बिरंगे फूलों से लदी थीं और हवा में मन को मोह लेने वाली सुगन्ध थी। स्वर्ग जैसे इस स्थान में महर्षि वेदव्यास जी का आश्रम था।

जब नारद मुनि वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि महर्षि वेदव्यास अपनी कुटिया के बाहर एक वटवृक्ष के नीचे बैठे हैं। नारद मुनि को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि श्रद्धेय ऋषिवर अत्यन्त उदास व निराश प्रतीत हो रहे हैं। महर्षि वेदव्यास अचल बैठे थे, कन्धे झुके हुए, मानो उन पर कोई भारी बोझ हो, माथे पर चिन्ता की लकीरें और शून्य में ताकती आँखें। नारद मुनि को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि कोई बात है जो उन्हें बहुत विचलित कर रही है।

नारद मुनि के संकीर्तन के मधुर स्वरों को सुनकर, महर्षि वेदव्यास ने आदर के साथ खड़े होकर देवर्षि का स्वागत किया और फिर उन्हें अपने निकट बैठने के लिए आमन्त्रित किया।

नारद मुनि ने महर्षि वेदव्यास द्वारा बताया गया आसन ग्रहण किया, और महर्षि के चिन्तित मुख की ओर ध्यान से देखते हुए वे बोले, "आदरणीय व्यास जी, आप समस्त ज्ञान व प्रज्ञान के मूर्तरूप हैं। आपने वेदों व पुराणों का संकलन किया है और ब्रह्मज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाया है। फिर

आप इतने उदास क्यों दिखाई दे रहे हैं? हे ऋषिवर! क्या विश्व पर कोई संकट आने वाला है जिसने आपको इतना व्याकुल कर दिया है?"

वेदव्यास जी ने गहरी साँस लेते हुए उत्तर दिया, "हे देवर्षि नारद, मैं विश्व पर आने वाले किसी संकट के कारण चिन्तित नहीं हूँ। मैं तो अपनी गम्भीर दशा के बारे में विचार कर रहा हूँ। जो भी अध्ययन करने योग्य है, मैंने उसका अध्ययन कर लिया है—मेरे पढ़ने के लिए अब कुछ शेष नहीं है। मैंने अपने सभी कर्तव्य पूरे किए हैं; मैंने नित्यकर्मों का श्रद्धापूर्वक पालन किया है। मैंने सदैव ही देवताओं को, ऋषि-मुनियों को, पूर्वजों को और ब्राह्मणों को चढ़ावा अर्पित किया है। मैंने अनगिनत यज्ञ किए हैं। केवल यही नहीं, मैंने योग पर प्रभुत्व प्राप्त किया है; मैंने निर्विकल्प समाधि को प्राप्त किया है। अपनी सामर्थ्य अनुसार मैंने हर उस वस्तु पर प्रभुत्व स्थापित किया है जिस पर मैं कर सकता था। हे देवर्षि नारद, मैंने यह सब किया है, परन्तु फिर भी मैं आनन्दहीन हूँ!" इतना कहकर निराशा में डूबे महर्षि मौन हो गए।

करुण मुस्कान के साथ, प्रबुद्ध नारद मुनि ने कहा, "नारायण! नारायण! हे आदरणीय महर्षि व्यास, यह सत्य है कि आपने सभी निर्धारित अनुष्ठान किए हैं और वह समस्त ज्ञान-प्रज्ञान प्राप्त किया है जो प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु. . . क्या आपने कभी उन भगवान का अमृतमय नाम गाया है जो नित्य आनन्दमय हैं? क्या आपने कभी भक्तिरस का स्वाद चखा है?"

महर्षि वेदव्यास जी की आँखें चौड़ी हो गईं, "नहीं देवर्षि नारद, मैंने कभी भगवन्नाम नहीं गाया।"

नारद मुनि ने उत्तर दिया, "यही कारण है महर्षि कि आपको इतनी नीरसता और आनन्दहीनता का अनुभव हो रहा है। 'नारायण' के नाम का संकीर्तन किए बिना, ईश्वर के नाम का अमृत पिए बिना, भक्तिरस का पान किए बिना तो निर्विकल्प समाधि में भी आनन्द नहीं है।"

महर्षि वेदव्यास ने नारद जी से अनुरोध किया कि वे उन्हें भगवान के नाम का गायन करना, संकीर्तन करना सिखाएँ। देवर्षि के निर्देशानुसार वेदव्यास जी ने उसी पल से भक्तिमार्ग अपनाया और अपने दैनिक योगाभ्यास के अन्तर्गत संकीर्तन करना आरम्भ कर दिया। भगवन्नाम को गाते-गाते, अन्ततः वेदव्यास जी अमृतमय भक्तिरस से सराबोर हो गए। अन्तर में इस आनन्द को पाकर उन्हें अपने समस्त अभ्यासों में आनन्द की अनुभूति हुई।

दिव्यानन्द के इसी विस्फोटन के बाद महर्षि वेदव्यास जी ने श्रीभागवत पुराण की रचना की। इस पवित्र भारतीय ग्रन्थ में ईश्वर-भक्ति का गुणगान किया गया है। भक्तिरस की प्राप्ति का माध्यम है, नामसंकीर्तन।

श्रीभागवत पुराण, १.५, १.६

पुनःकथित ©२०१४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®।